आरोपशास्त्र विमर्श
रामबक्ष जाट

आरोपशास्त्र विमर्श

रामबक्ष जाट

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अगस्त, 2024

© रामबक्ष जाट

अनुक्रमणिका

दोस्ती के गुर	4
जोशी जी का दर्द	31
आरोपशास्त्र विमर्श	35
स्त्री-विमर्श	42
रेल में रैली	49
ईर्ष्या का दुःख	55
भूमण्डलीकरण की चिऊँटी	61
निन्दा का समय	64
दहेज के पक्ष में दलील	67
सतयुग में मीडिया	70
त्रेतायुग में रिश्वत	73
प्रतिभा का दिल्ली-प्रवास	79

भ्रष्टाचार ही भ्रष्टाचार का शस्त्र 82

जातिवाद बनाम अन्य वाद 91

महापुरुषों के कारनामें 96

चतुर सुजान कौन ? 104

भूमण्डलीकरण की अफ़रा-तफ़री 111

मंच के पीछे के लोग 114

ईर्ष्या से ईर्ष्या 120

पत्नी की शरण में 123

भ्रष्टाचार के पक्ष में मतदान 126

मतदान से पहले नतीजे 132

हारने के लिये टिकट 147

मतदान के बाद 150

दुःख का अन्त नहीं 170

दोस्ती के गुर

[1]

भाइयों और बहनों!

आप सभी का इस स्तंभ में स्वागत है। आप ही की तरह मैं अख़बारों में गाली-गलौच, मारपीट, निन्दा-आलोचना पढ़-सुनकर थक गया हूँ। इसलिए मैंने सोचा कि इसमें हम सबकी तारीफ लिखेंगे। सबसे प्रेम करेंगे। दोस्ती निभायेंगे। नये-नये दोस्त बनाएंगे। यार लोगों ने मुझे बहुत समझाया कि इस ज़माने में दोस्ती करोगे तो घाटे में रहोगे। मैंने उनकी बात नहीं मानी। मैं किसी की निन्दा नहीं करूंगा। सभी का इस स्तंभ में गुणगान ही करूंगा। यहाँ तक कि मुख्यमंत्री की भी निन्दा नहीं करेंगे। न पुराने मुख्यमंत्री पर सब पापों का दोष मढ़ेंगे और न नये मुख्यमंत्री को कुछ भी करने से रोकेंगे। जो अच्छा काम करेगा, उसकी हम तारीफ करेंगे। हम उसकी भी तारीफ़ करेंगे, जो फिलहाल अच्छा कुछ नहीं कर रहा है, परन्तु जो यह पढ़-सुनकर कोई अच्छा काम कर ले। इस उम्मीद में उसकी भी जय बोलेंगे ।

याद रखिए हम तारीफ़ तो करेंगे, चापलूसी नहीं करेंगे। हम सच ही बोलेंगे। मीठे वाला थोड़ा ज्यादा बोलेंगे। पुराने जमाने में सरकार कोई अच्छा काम करती थी, तो पत्रकार खट लिखते थे- चुनाव सिर पर है। आजकल देखो! जोधपुर में फव्वारे चल रहे

हैं। यार लोगों ने फब्ती कसी, 'इधर तो अकाल चल रहा है और मुख्यमंत्री के गृहनगर में फव्वारा चल रहा है।' अब यह ज्यादती है। हम यह नहीं करेंगे। सुखाड़िया जी उदयपुर के थे तो वहाँ फव्वारे चल गए। अच्छा ही हुआ। अगली बार फव्वारा हमारे नागौर में चल देगा। क्या पता कभी भरतपुर में चल जाए। समय-समय की बात है। हम इस कॉलम में यह बिल्कुल नहीं करेंगे।

चलो, आपको एक सत्य कथा बतलाता हूँ। अजी, कोई चटपटी खबर नहीं है। देव-दुर्योग से मेरी बेटी बीमार हो गई। सो हम महात्मा गाँधी अस्पताल में पहुँच गए। (अब आप कृपा करके यह मत कहना कि बेटा बीमार होता तो किसी निजी नर्सिंग होम में ले जाते! यह घटिया तर्क मन में मत लाना।) अब सुबह-सुबह क्या देखते हैं कि नर्स की टेबेल पर पट्टियों, इंजेक्शनों, ग्लूकोज़ की बोतलों के ढेर लगे हुए हैं। आँखें फटी की फटी रह गई। पांच वर्ष पूर्व इसी अस्पताल में मेरे पिताजी आए थे। तब यह दृश्य देखने को आँखें तरस गई थी। इतनी खुशी को एकाएक सहेज न पाया। अपनी मूर्खतापूर्ण जिज्ञासा किसी अनुभवी पत्रकार के सामने रखी तो पता चला स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र चौधरी जोधपुर के हैं। अजी न मालूम कब सुबह-सुबह अस्पताल पहुँच जाएं। पिताजी के दिनों में स्वास्थ्य मंत्री चुरु के थे। तो पट्टियाँ जोधपुर कैसे आती! भगवान जाने क्या सच है? मैं तो कभी चुरु गया ही नहीं। चुरु में पता नहीं क्या होता होगा आजकल? परन्तु हमारे गाँधी अस्पताल में मुफ्त मिलने वाली दवाओं की सूची लगी